

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

६२४९ (६२८)

ग्रंथ नाम

कपिल स्मृति.

विषय

स्तो. स्तु. श्रुपाठ्या

(1)

वर्गी  
त्रयी  
युक्त  
श्री

॥ श्रीकलदेव त्रसुत्तं कपीलसुती मातेसु उपदेशकेलाभा ॥  
 ॥ सौवदमीयाजलधिजापतीजापदाते ॥ वर्णनियाहरि ॥  
 ॥ चीयांनुसंपदाते ॥ बोलमनी कपीलाभागवंतीस्व ॥  
 ॥ वाचेमातेसंतेचगुणगार्शनकेशवाचे ॥ १ ॥ श्लोक ॥  
 ॥ श्रीकपीलाउवाच ॥ संचितयद्रव्यवतः श्वरुणारैवी ॥  
 ॥ देववज्राकुशध्वजसरोरुहलोचनाछयं ॥ उत्तुंगर ॥  
 ॥ स्रविलसनखचक्रवालागजास्नाश्रीशरुतमरुह ॥  
 ॥ दयांधकारं ॥ याध्यावंबेरं हरिचीयापदपंकजाते ॥  
 ॥ वज्रांकुशध्वजसरोरुहअंकजाते ॥ आरुतवर्तुळम् ॥  
 ॥ खेंदुर्द्विप्रमाते ॥ नाशीआनादीतमसुर्यजसाप्रमाते ॥

(2)

॥ १ ॥ यच्छेचनि श्रीतसरि त्रवरोदकेन ॥ तिथेनि मूच्छदि  
॥ कृते नशीवशीवो मृत ॥ ध्यातुर्मनि रामलेशे लानि  
॥ स्वजं ॥ ध्यायेथ्यी रं मम वत चरणा रवीदं ॥ धीका ॥  
॥ अक्षाकीतां चरणते शीवसाजकाला ॥ चेतो सी रि ५  
॥ गुरुलदा रुनीवेजकाला ममाथा चरुनी शीवतो शीव  
॥ नीरजाला ॥ ध्यावं अं सं सरती सापदनी रजाला ॥  
॥ धा श्लोक ॥ जानुदुयं जलजलोचनया जनां म्य ॥ ल  
॥ इम्यां रिवलस्य सुखेदि तया वीधातु ॥ ठवे नी ध्या  
॥ यकरं पल्लवरो चीहाया ॥ सल्ला लि तं दं दि वी कोर  
॥ अवशा कुर्यात् ॥ धा मं जी वरि चरण सुंदर पाद पद्मा ॥

(2A)

॥ पासुनी जानुवरि उठनी नीय पुढ्या ॥ त्रीक र्त्नी चुरि  
 ॥ ते जे ननी जे नाची ॥ माता वीधी यव घुफव संजने  
 ॥ ची ॥ ७ ॥ श्लोक ॥ उर सुपुढि जयार धीशा प्रमाना ॥  
 ॥ वोजे नीधी अतिसी का कस माव मासे ॥ व्याल व पीत  
 ॥ वरु वासु सीवत मान ॥ कांची कलाष परि रंभी नीतंब  
 ॥ कीब ॥ ८ ॥ मांभी उया खग गुजा वरि वतमाना ॥ ज्या  
 ॥ सावज्या अतिसी का कस मासु माना ॥ पीता बंश वरि  
 ॥ कठि अती रंभ काची पत्ता लाला मणी मया लघुघं  
 ॥ टी काची ॥ ९ ॥ नाभी इंदु कुन कोश गुहो दर सुठ ॥ य  
 ॥ चामयौ निधी घणा र्वील लोक पयं ॥ युं छं हरि मणी  
 ॥ मृशास्त नशोर मुष्ये ॥ ध्या ये दुयं वी मरु हार मयुखा

(3)

॥ गोरुं ॥ १० ॥ श्रीका ॥ ना सी दही कमल पुत्र वीरं वीजात ॥  
॥ त्रैलोक्य उद्भव जया जगदां जजात ॥ वीस्ती उडिरनर  
॥ यवन भावदा वी ॥ पांचस नौ उग कल्प असी भाव  
॥ दा वी ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ वश्यो श्री वासु मृश मष्य महा  
॥ वी श्रुते ॥ पूसां मने न यन मी वृती मादधाना ॥ कंठ  
॥ चकौ सुक मजे रधी मु राणा यी ॥ क्यन्मिन प्यरधी  
॥ ललोकन मस्कृता प्य ॥ १३ ॥ टी ॥ श्री युक्त हकमल  
॥ साक्य मोघनाचे ॥ जे दे मनास्य सुरय वा ठ वीलो  
॥ चनाचे ॥ ध्यावे चराचरनमस्कृता कंदराते ॥ जो  
॥ को सुफामीर वी तो आतीसुंदराते ॥ १४ ॥ श्लोक ॥  
॥ बाहू श्रमं कुगी रेः परिवर्तमाना ॥ मी णी कि ना हु

(3A)

॥ चलयांनीनी लोकपालानं ॥ संचितयदका शारारम  
 ॥ स्रं क्रतेजं ॥ शाखंचतकरसरोतरुस्रजदं सं ॥ १० ॥ की  
 ॥ का ॥ जिमदर मचीती वाहुसुधां वधीते ॥ असेवेत  
 ॥ यासकववीर रसां वधीते ॥ धारादहा शत सुद  
 ॥ इति चे चहाती ॥ पद्यातदसकरि शाखतस्मात्सु  
 ॥ ती ॥ १५ ॥ कौमोदकी फागवतो दृशितां स्मरेत् ॥ दीप्ता  
 ॥ मरुति मठ शो उति त कर्द मने ॥ मालां मधुवृतवत यगी  
 ॥ रो म जु जु यं ॥ चे तहा हत्व मस्वी सं मणी मध्व कंठे ॥  
 ॥ १५ ॥ टीका ॥ कौमोदकी त्रिषगदा स्मरुं सं तरंगे ॥ ॥ जे  
 ॥ मास्वली आसर मर्दिनी इतरंगे ॥ गुंजा रवे कंठनी सवा

(५)

॥ गणेश माला ॥ कंठी मण्डली जीवनी तो स्थी रजंग माला ॥

॥ १५ ॥ श्लोक ॥ ज्ञानु कं पीत पीये हं प्रही तमुं ते गी संधि

॥ तये गव तो वदना रवि दं ॥ यद्वि स्फुरन्म कर कू उ

॥ ल कं लं गि तेन ॥ यी यो की ता मल कपो ल मु दार मो सं ॥

॥ व द्वा ॥ टी का ॥ ज्वा ला स्य क्य क र उ च क र नी त पी ॥ या

॥ चि मु र्वा ज्च सु रव को उ ज मी नी रो पी ॥ गं उ स्थ ली म

॥ क र कुं उ ल मो ती कां ची ॥ जो ले प्र का सर क ता सं त ती

॥ ना सी का ची ॥ १५ ॥ श्लोक ॥ ये छी नि के त म ली श्री प

॥ रि से ज्य माने ॥ प्र सा स्वा या कु टी ल कुं त ल वृ ष जु श ॥

॥ मी न दू या श्री राम यी श्री य द्ज व ने त्रं ॥ ध्या ये न्म ॥



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com